Class — T.D.C. Part I
Paper — II (Metaphysics)
Topic — Neutralism

Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Deptt. of Philosophy
R.N. College, Hajipur

तटस्थवाद (Neutralism)

आधुनिक काल में कुछ विचारकों ने मूल तत्त्व (Ultimate reality) की व्याख्या एक नयी विचारधारा के आधार पर की है। सामान्यतः विश्व में दो प्रकार के तत्वों की अनुभूति होती है — (1) जड़ तथा (2) चेतन। इस सिद्धान्त में मूल तत्त्व के स्वरूप को एकात्मक माना गया है, जो न जड़ है और न ही चेतन। इन दोनों तत्वों से भिन्न मूल तत्व का स्वरूप तटस्थ (Neutral) है, जिसकी संख्या अनेक है। तटस्थवादी विचारक इस तत्व को अनुभवगम्य (Experiencible) मानते हैं, इसलिए इससे उत्पन्न पदार्थ भी अनुभूति के ही दायरे में आते हैं। इन विचारकों का मत है कि जड़ एवं चेतन पदार्थों के बीच कोई मौलिक भेद नहीं है, दोनों के घटक तत्त्व (Constituent elements) एक ही हैं। ये तटस्थ तत्व जब एक खास रूप में सम्बन्धित होते हैं, तो जड़ की उत्पत्ति होती है और जब ये तत्त्व दूसरे विशिष्ट रूप में जुड़ते हैं, तो उससे चेतना की उत्पत्ति होती है।

इस सिद्धान्त के समर्थक आधुनिक विचारक हैं। इनमें मुख्य हैं — मैक, एवेनेरियस, जेम्स, रसेल, अमेरिका के नववास्तववादी होल्ट, पेरी आदि। तटस्थवाद के आरम्भिक रूप मैक, एवेनेरियस आदि के विचारों में मिलते हैं। मैक का कहना है कि विश्व का वही स्वरूप है, जैसा वह प्रतीत होता है अर्थात् प्रतीयमान विश्व (Apparent World) की हमें अनुभूति होती है। इस प्रतीयमान विश्व के सभी पदार्थ जड़ एवं चेतनता से पृथक् हैं तथा विविध परिस्थितियों के अनुरूप वे कभी जड़ एवं कभी चेतन प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार एवेनेरियस ने कहा है कि विश्व को जड़ एवं चेतन के रूप में दो भागों में विभक्त करना अनुचित है। मूल तत्त्व वास्तव में जड़-चेतन से भिन्न तटस्थ, शुद्ध सार्वभौम अनुभव (Pure universal

experience) है, जिससे सभी पदार्थों की उत्पत्ति होती है।

तटस्थवाद का सबसे विकसित रूप जेम्स के दर्शन में मिलता है। उनके अनुसार मूल तत्त्व शुद्ध अनुभव (Pure Experience) है। यह सतत् प्रवाहशील सरिता (continuously flowing stream) के समान है जिसके अन्दर अनेक तत्त्व हैं, जो न जड़ हैं और न ही चेतन। ये अनेकों तत्त्व विविध सम्बन्धों के द्वारा जड़ या चेतन के रूप में प्रतीत होते हैं। उदाहरण के लिए, कोई बिन्दु (O) किस रेखा (AB या CD) से सम्बन्धित है, यह प्रसंग पर आधारित होता है। यदि हम AB रेखा पर ध्यान दें, तो बिन्दु O रेखा AB से जुड़ी है और यदि हम CD रेखा पर ध्यान दें, तो बिन्दु O रेखा CD से सम्बन्धित है।

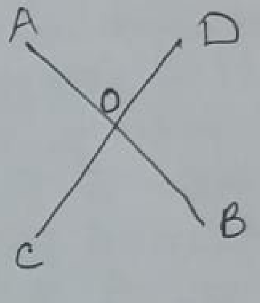

अमेरिका के नववास्तववादियों में होल्ट (Holt) एवं पेरी (Perry) के तटस्थवादी विचार भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। ये विचारक मानते हैं कि विश्व के मूल में तटस्थ तत्त्व हैं जो विभिन्न सम्बन्धों के आधार पर अलग-अलग समूह (Group) की रचना करते हैं। इसलिए जड़ एवं चेतन के बीच मौलिक भेद नहीं है। कुछ विचारक स्पिनोजा (Spinoza) के दर्शन को तटस्थवाद की संज्ञा देते हैं, किन्तु पश्चिमी दर्शन के इतिहासकार ने उन्हें प्रत्ययवादी (Idealist) विचारक ही माना है।

रसेल (Russell) ने भी अपने कई ग्रन्थों में तटस्थवाद का समर्थन किया है। उनके अनुसार मूल तत्त्व स्वरूप में तटस्थ, संख्या में अनेक, देश-काल में स्थित तथा गतिशील है। ये तत्त्व अनुभूतिगम्य हैं, जो न जड़ हैं और न ही चेतन। रसेल इन तत्त्वों को घटनाएँ (Events) कहते

है। इनके अनुसार विश्व के समस्त पदार्थ घटनाओं के समूह हैं, जिनके आपसी सम्बन्ध अनेक प्रकार के होते हैं। इन विभिन्न सम्बन्धों के कारण कोई समूह जड़ तो कोई चेतन कहलाता है।

समीक्षा — इस सिद्धान्त में अनेक त्रुटियाँ हैं —

(i) तटस्थवाद के समक्ष जड़ एवं चेतन की व्याख्या की समस्या उत्पन्न होती है। जिस तटस्थ तत्व में किसी के गुण उपस्थित नहीं हों, उससे जड़ या चेतन की उत्पत्ति कैसे होती है — यह स्पष्ट नहीं है। अनेकों तटस्थ तत्वों से जड़ एवं चेतन की उत्पत्ति को स्वीकार करने का अर्थ है — अभाव (Nothing) से भाव (something) का उत्पन्न होना, किन्तु यह दोषपूर्ण है।

(ii) इस सिद्धान्त में बतलाये गये विशिष्ट प्रकार के सम्बन्ध का स्वरूप अस्पष्ट है। यदि ये सम्बन्ध भी तटस्थ हैं, तो उनसे जड़ या चेतन का उत्पन्न होना समझ के परे है और यदि ये सम्बन्ध भी किसी दूसरे प्रकार के हैं, तो यह सिद्धान्त तटस्थवाद न होकर द्वैतवाद है।

इसप्रकार यह सिद्धान्त विश्व की सटीक व्याख्या करने में पूर्ण सक्षम नहीं है।

———X———X———